eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

नासिरा शर्मा का कथासाहित्य मूल बोध में योगदान

रीना देवी[1], डॉ0 स्नेहलता[2]
[1]शोधार्थी– हिन्दी, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय रजबपुर, गजरौला, (उ0प्र0)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, रजबपुर, गजरौला (उ0प्र0)

Received: 20 July 2024, Accepted: 28 July 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2024

Abstract

नासिरा शर्मा देश के सुप्रसिद्ध साहित्य–जगत् की लेखिका हैं। वे हिंदी, उर्दू, फारसी, पश्तों, अँग्रेजी आदि भाषाओं में उनकी अच्छी पकड़ हैं तथा मूर्धन्य कथाकार उपन्यासकार मानी जाती हैं। उन्होंने बहुत सारी कहानियाँ, उपन्यास, निबंध, लेख संग्रह, अनुवाद, रिपोर्ताज नाटक तथा कुछ कहानियों पर टेलीफिल्मस और धारावाहिक लिखी है। नासिरा जी समाज में उपस्थित औरतों के प्रति दयनीय अवस्था को अनुभव किया था और अपने अनुभवों को उन्होने साहित्य के माध्यम से निर्भीकता से समाज में उपस्थित रूढ़िवादियों तथा कुप्रथाओं को और औरतों तथा परिवारों में बँटवारे को लेकर किए जा रहें अन्याय के विरूद्ध सर्वप्रथम आवाज उठाई। उनकी भाषा में ग्रामीण शहरी जीवन की सरलता झलकती है। नासिरा जी की चिंतन–परंपरा का आधार उनके वालिद द्वारा बताये रास्ते में चलकर एक नया मुकाम हासिल किया।

नासिरा जी का उपन्यास भारतीयता का नया बहुसार्थक पाठ रचती है। आज वे उत्तर आधुनिक समय में जबकि भूमंडलीकारण बाजारवाद की तमाम शक्तियाँ हमारी जातीय स्मृति, जातीय अस्मिता हमारे जातीय संवेदना को मिटा देने पर आमदा दिखाई देती है। ऐसे कठिन समय में हमारे देश में नासिरा जी के उपन्यास अर्थवत्ता और बढ़ती जाती है। इनके उपन्यासों में ग्रामीण भाषा का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। नासिरा जी ने पात्रनुकूल भाषा का प्रयोग कर कीर्तिमान स्थापित किया है। नासिरा जी की भाषा जनमानस की भाषा हैं। इनके उपन्यासों में हिंदी उर्दू, अँग्रेजी, फारसी शब्दों का प्रयोग जो जनमानस में प्रचालित हैं का प्रयोग देखने को मिलता हैं।

मूल शब्दः– कहानियाँ, उपन्यास, निबंध, लेख संग्रह, अनुवाद, हिंदी, उर्दू, फारसी, पश्तों, अँग्रेजी

Introduction

समाज में आदर्श एवं यथार्थ दोनों की अपनी विशेषताएं हैं और उनके बीच ही विसंगतियों का विकास होता है। सामाजिक आदर्श की अपेक्षा यथार्थ की ओर व्यक्ति का झुकाव होता है और वह परंपरागत रूढयों एवं मान्यताओं को तोडने को कटिबद्ध होता है। आधुनिक उपन्यासों के नारी चरित्रों में एक संघर्षात्मक स्थिति का चित्रण उपन्यासकारों ने किया है। महरुख का रफत के साथ विवाह से पहले जाना मुस्लिम परंपरा के विरुद्ध है किंतु बदली हुई परिस्थितियों में शिक्षा देते जाने में परंपरा की परवाह नहीं की है। इसी प्रकार काली आँधी की मालती का घर की दीवारों से बाहर आना, नेता बनना आदि तत्कालीन यथार्थवादी परिस्थितियों की देन है। तभी यह चरित्र सफल नेता के रूप में समाज की उपलब्धि है। शाल्मली का चरित्र भी यथार्थ रूप में उभरता है। वह अपने पति

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

को इज्जत देती है किंतु कर्त्तव्य के बीच में आने पर यथार्थ का बोध कराते हुए कह देती है– सभी औरतें यदि इस प्रकार अर्जी देने लगें तो हो चुका काम। वह पति की नहीं, सरकार की नौकरी है।

मनुष्य के जन्म के साथ ही उसके सम्बन्ध पैदा होते है और उतरोत्तर विकसित होते चलते है। कुछ सम्बन्ध उसे परम्परा से मिलते है और कुछ स्वयं वह बनाता है। मनुष्य अपनी स्थिति और परिस्थितियों में विशेष प्रकार का व्यवहार करता है। उसके स्वच्छ और उपेक्षित व्यवहार के लिए सामाजिक संस्थाएँ उस पर नियन्त्रित करती हैं, जो सामाजिक प्रक्रिया के लिए आवश्यक भी है। अतः मनुष्य का जो व्यवहार दूसरे मनुष्यों के साथ है उससे ही सम्बन्धों का निर्माण होता है। इन आपसी सम्बन्धों से ही समाज का निर्माण होता है।

समाज एक व्यापक संकल्पना है। मनुष्य समाज का एक अभिन्न अंग है। मनुष्य जीवन के सभी क्रियाकलाप इसी समाज में सम्पन्न होते हैं। मनुष्य की शिक्षा–दीक्षा, विवाह, गृहस्थी, उपजीविका, लेन–देन, संतानोत्पत्ति, उनका पालन–पोषण, शिक्षा आदि कार्य समाज में सम्पन्न होते हैं। समाज की अवधारणा मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति पर आधारित है। यही उसे सम्बन्धों की ओर अग्रसर करती है। मनुष्य के विकास के लिए उसके सम्बन्धों में एकरूपता होना अनिवार्य है। सम्बन्धों की खटास ही समाज को छिन्न–भिन्न और अधोगति देने वाली है तथा सम्बन्धों में और संस्थाओं में परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है। आज के जटिल एवं भौतिकवादी युग में जहाँ एक ओर परम्परागत संस्थाएं असहाय दिखाई देती है वही दूसरी ओर समाज के बदलते परिवेश में समाज का सूक्ष्म व वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक हो गया है।

सामान्य शब्दों में समाज का अर्थ है –''समूह, गिरोह या एक स्थान पर रहने वाला एक ही प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समूह, समुदाय या किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा, सोसाइटी।'' श्यामसुन्दरदास जी द्वारा सम्पादित कोश में समाज का अर्थ – (1) समूह/संघ/गिरोह दल, (2) सभा, (3) हाथी, (4) एक ही स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करने वाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समूह बनाते हैं। समुदाय–जैसे शिक्षित समाज, ब्राह्मण समाज। (5) वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित की हो। जैसे–सभा,संगीत, समाज, साहित्य, समाज। (6) प्राचुर्य – समुचय/संग्रह, (7) एक प्रकार का ग्रहयोग, (8) मिलना–एकत्र होना।'' आर०पी० पाठक जी द्वारा सम्पादित कोश में समाज का अर्थ – ''संघ, सभा, समुदाय।'' दिया गया है। कालिका प्रसाद ने समान कार्य करने वालों के समूह को प्रमुखता दी है। उनके अनुसार समाज का अर्थ है – ''मिलना, एकत्र होना, समूह, संघ, दल, सभा, समिति, अधिक्य, समान कार्य करने वालों का समूह, विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघटित संस्था, ग्रहों का एक योग हाथी।'' डॉ० कुँवरपाल सिंह ने समाज को परिभाषित करते हुए इसकी विशिष्टताओं को ध्यान में रखकर कहा है – ''समाज की परिभाषा एक ऐसे संगठन के रूप में की जा सकती है जो निरन्तर विकसित होता रहता है तथा जिसके प्रमुख क्रियाकलाप किसी दैवी शक्ति पर नहीं बल्कि उत्पादन प्रणाली के विकास पर आधारित होते है।'' डॉ० स्वर्णलता का मत है कि ''वह सामाजिक सम्बन्ध जो एक–दूसरे को प्रभावित करें।'' उसे ही समाज की संज्ञा दी है। हिन्दी के साहित्यकारों ने भी समाज सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किए

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

है। ''समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जिसमें स्वार्थो की सार्वजनिक रक्षा के लिए अपने विषम आचरणों में साम्य उत्पन्न करने वाले कुछ सामान्य नियमों से शसित होने का समझौता कर लिया जाता है।'' स्पष्ट है कि समाज का गठन व्यक्ति सुरक्षा के लिए हुआ है, और इसमें विषम स्वभाव के व्यक्तियों में साम्य स्थापित करने हेतु कतिपय नियमों का निर्वाह करना आवश्यक होता है।

2. प्रस्तावित कार्य में उल्लेखनीय योगदान :–

नासिरा शर्मा सामाजिक समस्याओं , सामाजिक वर्ग वैषमय एवं आर्थिक विषमता की लेखिका हैं। औरतों के अभिशप्त जीवन को इन्होनें वाणी दी है यद्यपि नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर अनेकानेक अनुसंधानकार्त्ताओं ने अनुशीलन किया है। लेकिन नासिरा शर्मा ने वैश्विक कुरीतियों, जनमानस की सोच को उजागर करके नया प्रयोग किया है। उसका समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषण अभी तक नहीं हुआ हैं। मेरे अध्ययन से वर्तमान भाषा का नासिरा शर्मा के उपन्यास में जिन स्वरूप में व्याप्त है उसे प्रकाश में लाकर उसके व्यवहार क्षेत्र को उजागर कर एवं उपन्यास मे दर्शित समाज में वर्ग विशेष के भाषा किस तरह परिवर्तित हो रही है इस का भी अध्ययन करना।

3. पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण

1. 2006 में श्रीमती आरती पाठक ने प्रसाद के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन डॉ. व्यासनारायण दुबे के मार्गदर्शन में किया । उन्होंने प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में उस समय की भाषा का समाज में किस प्रकार प्रयोग हुआ है का ही अध्ययन किया है, उन्होंने भाषा को वर्ग, जाति, शिक्षा, लिंग, उम्र, स्थान के आधार पर विश्लेषित किया है। उनके अध्ययन से उस काल की भाषा का आज के संदर्भ में होने वाले परिवर्तनों को देखा जा सकता हैं।

2. 2007 मे मोती लाल शाकार ने डॉ. व्यासनारायण दुबे के मार्गदर्शन में वृदांवन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन किया है। उन्होंनें उस समय के समाज में हिन्दी भाषा का जो प्रयोग हुआ का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन किया है। तथा इससे ज्ञात होता है कि उस समय का समाज कितना अधिक उन्नत था उसके आधार पर भाषा समृध्द हो रही है। ऐतिहासिक उपन्यासों में पात्रनुकूल जिस भाषा का प्रयोग हुआ है वह वर्तमान परिवेश में समाज से बाहर ही हो गया है।

3. 2013 – 14 में अंजु सोनी ने मोहन राकेश के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन डॉ. व्यास नारायण दुबे के निर्देशन मे किया गया है। मनुष्य भाषा और समाज की बीच की कड़ी है जैसे – जैसे समाज विकसित होता जाता है। भाषा का प्रयोग भी समाज में होने लगता है। शोधार्थी ने मोहन राकेश ने अपने नाटकों का मध्यमवर्ग की समस्याओं को चुना है। उनकी भाषा सहज और सरल है। समान्य बोलचाल की भाषा है। शोधार्थी ने सामाजिक स्तर के आधार पर भाषा का अध्ययन किया है।

4. प्रस्तावित शोध–प्रविधि

शोध की वैज्ञानिक कार्यपद्धति को अपनाते हुए इसका कियान्वयन विभिन्न चरणों में किया जा सकता है – ऐतिहासिक ,तुलनात्मक , वर्णनात्मक चूंकी मेरे शोध का क्षेत्र समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

उस आधार पर वर्णनात्मक शोध पद्धति को अपनाते हुए मैं अपने शोध के सोपानो को तय कर अपने शोध को पूर्णता प्रदान करूँगी। वर्णनात्मक के आधार को मूल में रखते हुए शोध के प्रारूप का निर्धारण किया गया है। जिसमें सामाजिक अनुसंधानों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तावित शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रणाली की विधि की सहायता ली जाएगी। प्राथामिक प्रणाली में सभी उपन्यासों की कथावस्तु का अध्ययन किया जाएगा एवं साक्षात्कार हेतु प्रश्नावाली तैयार की जाएगी । दूसरा प्रणाली में विभिन्न समीक्षात्मक पुस्तकों एवं इंटरनेट की सहायता ली जाएगी उपन्यास की भाषा का विश्लेषण कार्ड पद्धति के माध्यम से किया जायेगा ।

5. कथासाहित्य मूल बोध में योगदान

मनुष्य समाज के नियमों में बंधकर ही स्वयं को विकसित करता है। यदि वह उन नियमों से अलग होकर चलता है तो उसके सामने अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। जैसे – पानी की समस्या, सौदेबाजी की समस्या, बाल मजदूरी, भ्रष्टाचार, गरीबी, पुलिस व्यवस्था की समस्या, विवाह, तलाक, सम्बन्धों में बिखराव आदि की समस्या। नासिरा शर्मा ने इन सभी समस्याओं का उल्लेख अपने उपन्यासों में किया है। आधुनिक युग में सौदेबाजी एक गम्भीर समस्या है जो हमारे देश की उन्नति में सबसे ज्यादा बाधा उत्पन्न करती है। पढ़े–लिखे लोग बिना नौकरी के छोटे–मोटे धन्धे अपनाने के लिए मजबूर है या सड़कों पर आवारा घूम रहे है। 'अक्षयवट' उपन्यास का सलमान पढ़ा–लिखा नौजवान है, लेकिन उसके पास नौकरी नहीं है। नौकरी न मिलने के कारण इधर–उधर घूमता रहता है। नौकरी दिलवाने वाले लोग पहले सलमान से सौदेबाजी करना चाहते है। ''..... बहनोई तो राजी थे मगर उनके बाप अड़ गये कि फैक्टरी में काम तभी दिलाएँगे जब उनकी लड़की से मैं शादी कर लूँ। अब इस सौदेबाजी से दिल खराब हो गया।''

नौकरी के क्षेत्र में भ्रष्टाचार दृष्टिगत होता है। किसी बड़े व्यक्ति की सिफारिश पर अयोग्य व्यक्ति को नौकरी मिल जाती है और कई गुण सम्पन्न युवकों को रिश्वत या सिफारिश के अभाव में नौकरी नहीं मिलती।

हमारे समाज में पानी की समस्या एक गम्भीर समस्या है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए पानी जरूरी है। जल ही जीवन है और जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। 'कुइयाँजान' उपन्यास में पानी की समस्या दृष्टिगोचर है। बदलू को पानी की प्यास बहुत देर से लगी हुई है लेकिन वह अपनी प्यास को बूझा नहीं पाता। क्योंकि उसके पास बहुत कम पानी था। ''गरमी के कारण उसने कमीज उतार रखी थी। बेचैन–सा वह इधर–उधर ताकने लगा। उसे प्यास बड़ी देर से लगी थी। उसने उठकर घड़ौची पर रखी झज्झर से पानी उड़ेला। आधे से भी कम कटोरा भर पाया। उसने दो–चार घूंट भरे। अगर सुबह बिजली नहीं आई तो पानी भी नहीं आएगा।''168 डॉ० कमाल का कम्पाउडर पानी के विषय में कहता है कि ''हम सब प्यासे हैं। साला इस शहर मा चैन नहीं, कभी बिजली नहीं तो कभी पानी नहीं तो कभी रोटी नहीं।'' रत्ना के घर में पानी की एक बूंद भी नहीं है पड़ोस की लड़की पानी मांगने के लिए रत्ना के घर आती है। ''भाभी, पानी होगा ? चाय बनानी है, मेहमान आए हैं।''पानी की सुनकर रत्ना का मुंह उतर गया और लज्जित भाव से इन्कार करना पड़ा। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में गाँव वाले महरुख को पानी की समस्या के बारे में बताते

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

है। ''खेत सूखत हैं। बिना पानी के फसल कहां से होइहै ?'' ..... ''सूखा पड़ा है। जब बिजली आत है, तो पानी खिंच जात है सारा–का–सारा बड़े लोगन के खेत मां। हम लोगन का अइसा सुख नाहीं चाही, जो केवल नाम भरय का हो .....। ''पानी की कमी से लोग ही परेशान नहीं होते बल्कि पशु–पक्षी भी परेशान होते है। ..... ''कुत्ते पानी की तलाश में बेचैन फिर रहे थे। बार–बार नाली के पास जाकर वह बहती गंदगी को हसरत से देखते, फिर सूंघते और मुंह हटा लेते। नाली में बहती गंदगी इतनी गाढ़ी थी कि उससे पानी अलग नहीं था। जिसको वह सतह पर से चाटकर अपनी प्यास बुझा कते। चिड़ियों के गोल मुंडेरो पर बैठे हांफ रहे थे। उनकी व्याकुल नन्ही–नन्ही आंखें आंगन, हौज और नलके को ताकते–ताकते थक चुकी थीं। जहां तक वे पानी की तलाश में उड़ सकती थीं, उड़ी थीं, मगर हर जगह सूखा था। पानी की एक बूंद तक उन्हें कहीं नजर नहीं आ रही थी। उनकी नन्ही–सी जबान उनके तालू से चिपक रही थी।''

जब नाबालिक बच्चा किसी कारणवश परिश्रम कर धनोपार्जन करता है, उसे बाल मजदूरी कहते है। हमारे समाज में बाल मजदूरी एक गम्भीर व विचारणीय समस्या है। सरकार ने बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए अनेक सख्त कदम उठाये हैं लेकिन आज भी होटलों, दुकानों, कारखानों, मीलों में आदि अनेक स्थानों पर बालकों को मजदूरी करते देखा जा सकता है। ''बालश्रम में सहायक अनेक कारक है जैसे – भूख, गरीबी, शिक्षा का अभाव, दुःख, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का पूरा न होना, चिंता, पारिवारिक कष्ट, तनाव, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी, जिज्ञासा, पारिवारिक अनुशासन की कमी, औद्योगिकरण, फिल्में, नशाखोरी तथा उपेक्षित व्यवस्था आदि।'' 'अक्षयवट' उपन्यास में जगन्नाथ के पिता की दुर्घटना में मृत्यु के पश्चात् घर की सारी जिम्मेदारी वही निभाता है। जगन्नाथ के शब्दों में ''नौ लोगों का भोजन जुटाने के लिए मैं उसी स्कूल के सामने छोले, मूँगफली भी बेचता था, जहाँ पढ़ता था। फिर होटल ढाबों में काम भी किया, मार खायी, गाली सुनी, रात को रोया भी मगर हार नहीं मानी। मेरी इस दौड़ में कुछ वर्षों बाद बहन–भाई भी शामिल हो गये।' मुरली की भी ऐसी ही व्यथा है, जो माता–पिता के देहांत के बाद अपने मामा के साथ कमाई करता है। ''मुरली के घर की हालत बहुत खस्ता थी। माँ–बाप हैजे से मर चुके थे। मामा ने पाला था। उनके पास इतना था नहीं कि उसको आगे पढ़ाते–लिखाते, बस छठा पास करवाकर उसकी पढ़ाई बन्द करवा दी थी। ..... मामा ने अपनी बर्फ की चिरइयावाले ठेले पर उसको अपने साथ लगा लिया था।''

पुलिस समाज की रक्षा तथा सेवा के लिए नियुक्त की जाती है। यही पुलिस जब अपना कर्त्तव्य भूल कर जनता का भक्षण करने पर उतारू हो जाती है, तो जनता का जीवन दूभर हो जाता है। 'बहिश्ते जहरा' उपन्यास में कैदखाने में स्त्रियों पर अनेक अत्याचार किये जाते हैं। जब तय्यबा को पासदार बिना जुर्म के पकड़ ले जाते हैं, तब एक स्त्री कहती है, ''या अल्लाह! जाने क्या बनेगा उसका? ... . बनना क्या है? जो सब औरतों और लड़कियों का बन रहा है। बस इतना करना कि उसे गर्भ–निरोधक गोलियाँ ज़रूर दे आना, जो हर माँ और बहन करती हैं ..... हमारी औरतों का नसीब ..... उनकी गन्दगी भी अपने में ाली करो ..... उनकी गन्दगी का बोझ भी उठाओ, फिर ताने का बोझ सुनो।''176 'अक्षयवट' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने पुलिस व्यवस्था का चित्रण करते हुए

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

लिखा है ''इलाहाबाद शहर में ही नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान में पुलिस दो फाँक हो चुकी है। एक वह जो अपनी सत्ता का गलत इस्तेमाल करती है और भोले, सीधे, शरीफ नागरिकों का जीना हराम कर देती है। दूसरी वह जो कानून की रखवाली करती है, जनता की सेवा में अपनी जान गँवा देने में गर्व का अनुभव करती है। साथ ही अपने बेईमान पुलिस भाइयों के लिए दुख के साथ शर्मिन्दगी का अनुभव भी करती है। अक्सर बड़े अफसरान से यह पुलिस सजा भी पाती है मगर बहाल होते ही फिर वही 'कुत्ते की दूम बारह बरस भी गाड़ो तो टेढ़ी की टेढ़ी रहेगी' वाले मुहावरे पर चल पड़ती है।'' वर्तमान समय में पुलिस की छवि बिगड़ गई है। इसके लिए पुलिस स्वयं जिम्मेदार है। जनता के मस्तिष्क पर पुलिस की छवि इस प्रकार से बनी हुई है कि ''अपहरणकर्ता, बलात्कारी, डाकाजनी, दंगा–फसाद, जिस्मफरोशी, नशाबाजी में या तो इनका हाथ होता है या फिर यह सीधे यह सब खुद करवाते हैं। यह भारतीय पुलिस है। – स्वतन्त्र भारत की, भारत महान की! सो हर मामले में आजाद और घमण्डी। बिक यह आसानी से जाती है। खरीदी यह आसानी से जाती है। मौके पर यह चुप रह जाती है। कत्ल गारतगरी यह करती है। हर आफत से यह बच जाती है। ..... यह लोगों के लिए नहीं बल्कि लोग इनकी खुशहाली के लिए पैदा किए गये हैं।''

उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट हो जाता है कि नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में सूक्ष्म व पैनी दृष्टि से सामाजिक समस्याओं को उभारा है। ये समस्याएं देश की जड़ों को दीमक की तरह खोखला कर रही हैं। शीघ्र ही इन समस्याओं को दूर करने के प्रयास करने चाहिए। लेखिका का मत है कि गरीबी के कारण बच्चों को मजदूरी करने पर विवश होना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकताएं–वस्त्र, भोजन, आवास की पूर्ति नहीं होती। शहरों की अपेक्षा गाँव में गरीबी का चित्र भयावह दृष्टिगत होता है। गरीबी दूर करने हेतु परिवार के सदस्यों का एक–साथ मिलकर संघर्ष करना भी प्रशंसनीय एवं स्तुत्य है। पानी की कमी भी एक गम्भीर सामाजिक समस्या है। हमें पानी की बर्बादी नहीं करनी चाहिए बल्कि पानी का संग्रह करना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो। यदि ऐसा न हुआ तो तीसरा विश्व युद्ध पानी को लेकर होगा। जिस तरह से जनसंख्या की वृद्धि हो रही है उसी तरह नौकरी पाना कठिन हो गया है क्योंकि नौकरी कम हैं और नौकरी को चाहने वाले अधिक हैं। जिस कारण से नौकरी में रिश्वत व सिफारिशें व सौदेबाजी चल पड़ी है। आज के युग में नौकरी पाना एक गम्भीर समस्या बन गई है। इस समस्या को दूर करने के लिए अनेक उद्योग व कारखाने खोलने चाहिए और भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी को खत्म करना चाहिए। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि लेखिका ने अपने उपन्यासों में सभी सामाजिक समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। ताकि जनता जागृत होकर उन समस्याओं का निवारण करने का प्रयत्न करे।

6. निष्कर्ष

मनुष्य जन्म से ही कुछ ऐसी मूलभूत आवश्यकताएँ एवं प्रवृत्तियां लेकर आता है, जिनकी संतुष्टि के लिए उसे आर्थिक सन्दर्भ में प्रवेश करना पड़ता है। धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान, साहित्य आदि सभी क्षेत्र मानव संस्कृति के इतिहास में उत्तरोत्तर महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते है, लेकिन इन सबकी आधारशिला मनुष्य की आर्थिक स्थिति है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार अर्थ की गणना उन चार

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

परम पुरुषार्थ में की जाती है, जिनकी ओर मनुष्य का ध्यान सदा रहना चाहिए। ''इन पुरुषार्थ में अर्थ को धर्म के बाद दूसरा स्थान दिया जाता है और जिन्होंने अपनी सारी जिन्दगी धर्म को समर्पित कर दी थी ऐसे लोग भी धर्म, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिए अर्थ को आवश्य मानते है।'' अर्थ के स्वरूप एवं महत्त्व को जानने से पहले अर्थ या सम्पत्ति के अर्थ को जान लेना अति आवश्यक है।

साधारण बोलचाल की भाषा में अर्थ का अभिप्राय – धन, सम्पत्ति आदि चीजों से लिया जाता है। अर्थ का तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो एक ओर तो उपयोगी है और जिनका विनियम (क्रय–विक्रय) हो सकता है। जो वस्तु खरीदी बेची नहीं जा सकती, उसे सम्पत्ति नहीं कह सकते हैं। चाहे वह मनुष्य के लिए कितनी ही उपयोगी क्यों न हो। ''अर्थशास्त्र के अनुसार मित्र, पशु, भूमि, धन आदि की प्राप्ति और वृद्धि सब धन अर्थात् अर्थ कहलाते है।'' अर्थ का मनुष्य के जीवन में प्रमुख स्थान है। '' 'अर्थ' मनुष्य को इसलिए सर्व प्रिय नहीं कि वह ऐंद्रिय सुख प्रदान करता है, बल्कि उसको कष्ट और दुख में संरक्षण भी प्रदान करता है। वह कानूनी फैसलों के विषय बनाता है और युद्ध तथा संघर्ष को उकसाने में सहायता करता है। सम्पत्ति से रिश्ते जोड़े जाते है और तोड़े भी जा सकते है। सम्पत्ति आत्मोन्नति का साधन बनती है। व्यक्ति का सामाजिक दर्जा भी सम्पत्ति पर आधृत होता है।'' अर्थ का प्रभाव व्यक्ति के समूचे जीवन पर पड़ता है। मनुष्य के मन में जब धनलोलुपता ने जन्म लिया, तभी से उसने दूसरों का शोषण प्रारम्भ कर दिया। धन का संचय करने से एक विशेष वर्ग के पास अत्यधिक मात्रा में धन संचित हुआ, तो अन्य वर्ग का आर्थिक शोषण होने के कारण वह निर्धन बन गया। पूँजीवाद के कारण धनिक ओर अधिक धनवान बन गया तथा दरिद्र व्यक्ति ओर अधिक दरिद्र होता गया। समूचे विश्व में चलने वाली राजनीति की उथल–पुथल के पीछे 'अर्थ' की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

साहित्यकार समाज का सर्वाधिक सहृदय प्राणी है। समाज में होने वाले अनुकूल प्रतिकूल परिवर्तनों का उसकेहृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। वह उन भावों से आन्दोलित होता है और काव्य रचना करता है। साहित्य का समाज से सीधा सम्बन्ध होने से उसमें जीवन का स्वरूप और सौन्दर्य पूर्णतरू प्रत्यक्ष होता है। डॉ० शिव प्रसाद ने कहा है कि व्यक्तित्व कवि का वह गुण है जो अज्ञात रूप से उसके साहित्य की उन तमाम वस्तुओं के लिए जिम्मेदार है जो दूसरों के साहित्य में नहीं मिलती। नासिरा शर्मा जी को साहित्य विरासत में मिला है। उनका लेखन यूँ तो तब से ही शुरु हो जाता है जब पह तीसरी कक्षा की छात्रा थी। विद्यालय की कहानी लेखन प्रतियोगिता में उन्हें पुरस्कार मिला था। जब सातवीं कक्षा की छात्रा थी तो उनकी कहानी श्राजा भैया नामक कहानी एक पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह उनकी पहली प्रकाशित रचना थी। परन्तु उनकी विविध लेखन यात्रा सन् 1975 में सारिका के नवलेखन अंक में बुतखाना और मनोरमा पत्रिका में तकाजा कहानियों के प्रकाशित होने पर आरम्भ हुई। यानी जन्म के लगभग 28 वर्प पश्चात् विधिवत् लेखन यात्रा शुरू हुई जो अनवरत जारी है। नासिरा जी की रचना यात्रा के सरोकारों का फलक अत्यन्त विस्तृत है। एक तरफ वह अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर कलम उठाती है तो दूसरी ओर ठेठ भारतीय जीवन का चित्रण करती है। उनके लेखन में जहाँ मानवीय इतिहास अपने को संजोता है, वही समाजशास्त्र पैने और तीखे प्रश्न उठाता है। नासिरा जी ने अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही श्रेष्ठ रचनाएं हिन्दी साहित्य को प्रदान

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 07, Issue 02, July 2024

की है। विविध विधाओं में रचित साहित्य उनकी सर्वांगीण दृष्टि तथा श्रेष्ठ कृतित्त्व का स्वयं में ही पुष्ट प्रमाण है। हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में उनकी बलवती भूमिका रही है। उनकी अनुप्रेरक लेखनी से निम्नलिखित प्रमुख कृतियों का सृजन हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ. भाषाविज्ञान; सैद्धान्तिक चिन्तन, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन 1997.
2. गुप्त, मोतीलाल. आधुनिक भाषाविज्ञान की भूमिका. जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण, 1974.
3. तिवारी, भोलानाथ. भाषाविज्ञान. इलाहाबाद : किताब महल, 2000.
4. द्विवेदी, कपिलदेव. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, ग्यरहवाँ संस्करण, 2008.
5. पाठक, विनय कुमार. जयश्री शुक्ल. अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया. दिल्लीः भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005.
6. पाठक, रामचंद्र, आदर्श हिन्दी शब्दकोश, वाराणसी : भार्गव बुक डिपो; 1993,
7. प्रसाद, वासुदेवनंदन, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पटनाः भारतीय भवन प्रकाशन, तेईसवाँ संस्करण,
8. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, हिन्दी भाषा का समाजशास्त्र, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, द्वितीय संस्करण; 1994,
9. वर्मा, रामचंद्र, मानक हिन्दी शब्दकोश, प्रयाग : हिन्दी साहित्य सम्मेलन; 1996,
10. शुक्ल, त्रिभुवननाथ, हिन्दी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण, कानपुर : विकास प्रकाशन, प्रथम संस्करण; 2005,

अप्रकाशीत शोध–प्रबंध

1. सक्सेना साधना (1982) फणीश्वर नाथ रेणु के आंचालिक उपन्यासों का समाज भाषा वैज्ञानिक अध्ययन।
2. साकार, मोतीलाल (2008) वृदांवन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन रायपुर पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय।
3. पाठक, आरती. (2006) प्रसाद के नाटको का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन।
4. सोनी, अंजु (2013–14) मोहन राकेश के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन।